



Research Unit
Press Information Bureau
Government of India

सभी के लिए सुनिश्चित हो रहा एक सुरक्षित भविष्य

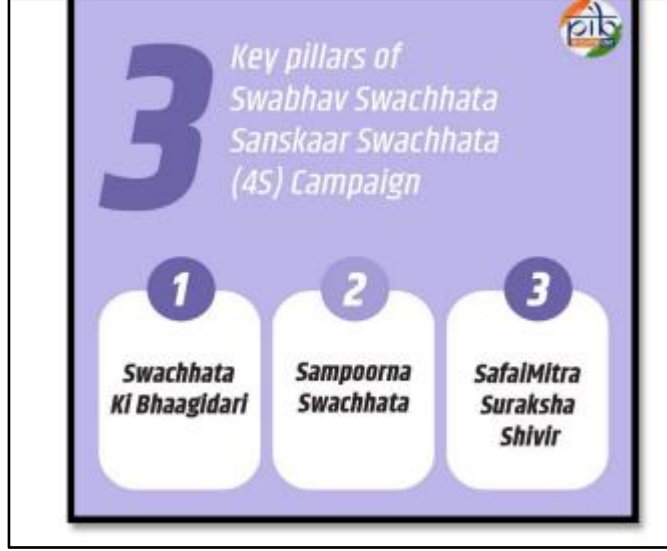
स्वच्छ भारत मिशन ने भारत के स्वच्छता परिदृश्य को सफलतापूर्वक बदल दिया

(केंद्रीय आवास और शहरी मंत्रालय)

सितंबर 12, 2024

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में इस बात पर जोर दिया कि कैसे स्वच्छता दैनिक जीवन का एक बुनियादी पहलू बन गई है, जिससे पूरे देश में व्यवहार में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे हैं। प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, स्वच्छ भारत मिशन की 10वीं वर्षगांठ पर 17 सितंबर को शुरू किया जा रहा 'स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4S) अभियान' 2 अक्टूबर, 2024 को समाप्त होगा।

यह अभियान 2017 से हर साल मनाए जाने वाले स्वच्छता ही सेवा अभियान की वार्षिक परंपरा के अनुरूप है। यह 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती के उपलक्ष्य में स्वच्छ भारत दिवस के अग्रदूत के रूप में कार्य करता है। पिछले वर्षों की तरह, आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय, जल शक्ति मंत्रालय के पेयजल और स्वच्छता विभाग (DDWS) के सहयोग से संयुक्त रूप से अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।



स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4एस) अभियान तीन प्रमुख स्तंभों पर आधारित है:

स्वच्छता की भागीदारी - स्वच्छ भारत के लिए सार्वजनिक भागीदारी, जागरूकता और गतिविधियाँ, **संपूर्ण स्वच्छता** - मेगा स्वच्छता अभियान और स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों (सीटीयू) का समयबद्ध परिवर्तन, जैसे गंदे स्थान

सफाई मित्र सुरक्षा शिविर - स्वास्थ्य जांच और स्वच्छता कार्यकर्ताओं के कल्याण के लिए एकल-खिड़की सेवा, सुरक्षा और सम्मान शिविर।

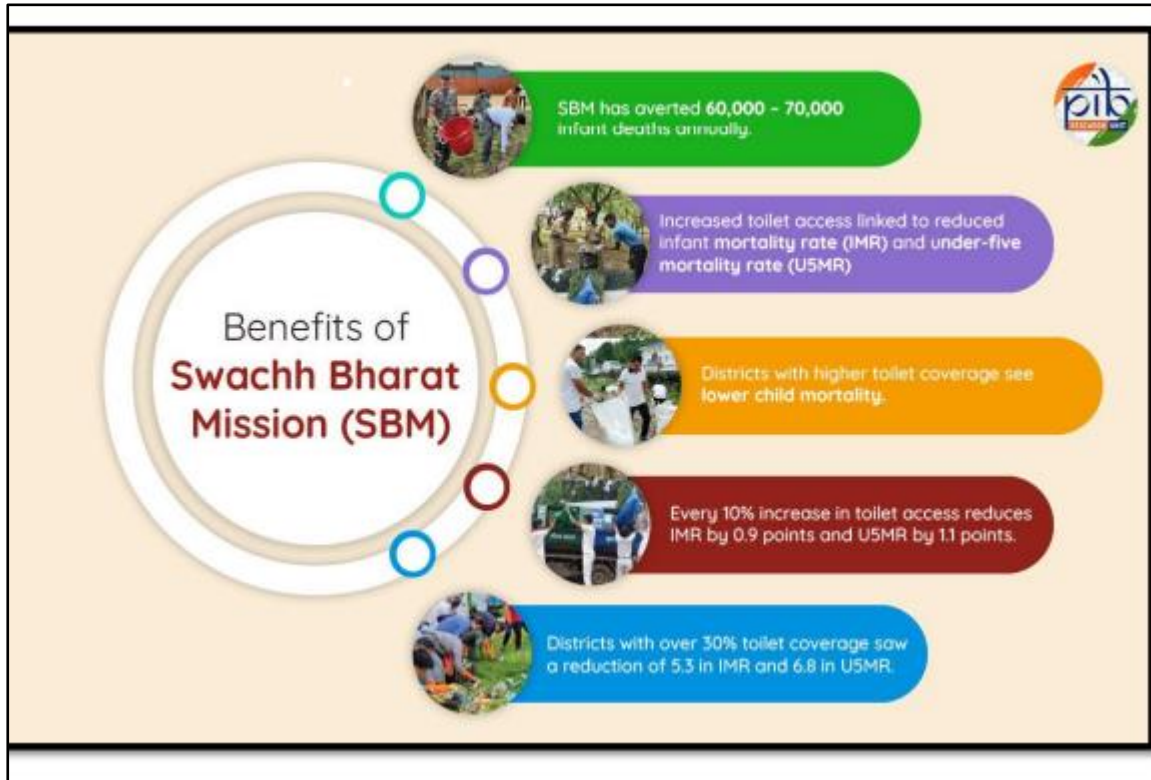
यह अभियान सार्वजनिक भागीदारी (जनभागीदारी) जुटाने, स्थायी स्वच्छता हासिल करने और स्वच्छता कार्यकर्ताओं (सफाई मित्रों) की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानने पर केंद्रित होगा। स्वच्छता ही सेवा 2023 में, 109 करोड़ से अधिक व्यक्तियों और भारत सरकार के 71 मंत्रालयों और विभागों ने 18 दिनों में राष्ट्रव्यापी अभियान में भाग लिया।

देश भर में प्रति दिन औसतन लगभग छह करोड़ लोगों की भागीदारी हुई। 18 दिनों की अवधि में देश भर से 53 करोड़ लोगों ने 'स्वच्छता के लिए श्रमदान' दिया, यानी प्रति दिन औसतन लगभग तीन करोड़ लोगों की भागीदारी। इन प्रयासों ने उल्लेखनीय परिणाम दिखाए - लगभग 7,611 समुद्र तटों की सफाई, 6,371 नदी तटों और जलप्रपातों को पुनर्जीवित करना, 15,576 से अधिक पुराने अपशिष्ट स्थलों को पुनः प्राप्त करना, 3,620 पर्यटन और प्रतिष्ठित स्थलों में सुधार करना और 1,23,840 से अधिक सार्वजनिक स्थानों को बहाल करना। इसके अतिरिक्त, 16,000 से अधिक जल निकायों को साफ किया गया, 87,000 से अधिक संस्थागत भवनों का कायाकल्प किया गया, और लगभग 66,779 कचरा-संवेदनशील स्थलों को साफ किया गया।¹

स्वच्छ भारत मिशन

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम), भारत में सार्वभौमिक स्वच्छता कवरेज प्राप्त करने की दिशा में एक आदर्श बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। 150वें जन्म तक भारत को "खुले में शौच मुक्त" (ओडीएफ) बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ 2019 में महात्मा गांधी की जयंती के बाद से इस पहल ने देश में क्रांति ला दी है मिशन का उद्देश्य ग्रामीण भारत में 100 मिलियन से अधिक शौचालयों का निर्माण करके लाखों लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार करना है। भारत, इन प्रयासों से समुदाय-संचालित स्वच्छता सुधार के लिए वैश्विक मॉडल बन गया है।

¹ https://swachhbharatmission.ddws.gov.in/about_sbm



स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण: चरण I (2014-2019)

स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (एसबीएम-जी) चरण-I एक अभूतपूर्व पहल थी जिसने स्वच्छता प्रयासों में राष्ट्रव्यापी भागीदारी पर जोर दिया। यह चरण दुनिया में सबसे बड़े व्यवहार परिवर्तन आंदोलन को चिह्नित करता है, जिसका लक्ष्य जागरूकता अभियान, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से खुले में शौच को समाप्त करना है। सरकारी प्रयासों और सामुदायिक भागीदारी को मिलाकर, एसबीएम-जी चरण-I सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रतीक बन गया है। शौचालयों और स्वच्छता संबंधी बुनियादी ढांचे के निर्माण से न केवल स्वच्छता में सुधार हुआ, बल्कि स्वास्थ्य पर भी काफी प्रभाव पड़ा, खासकर ग्रामीण इलाकों में जहां स्वच्छता सुविधाओं की कमी थी।

Achievements of SBM-G Phase I



- The WHO reported 300,000 fewer diarrheal deaths in 2019 compared to 2014, directly attributable to improved sanitation.
- Families in ODF villages saved an average of INR 50,000 annually on health costs.
- A significant reduction in groundwater contamination was noted in ODF areas.
- With better access to sanitation facilities, 93% of women reported feeling safer at home.



स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण: चरण II (2019-2025)

चरण-I की सफलता के आधार पर, एसबीएम-जी चरण II को 2025 तक ओडीएफ स्थिति को बनाए रखने और ठोस और तरल अपशिष्ट का प्रबंधन करने के लिए लॉन्च किया गया था। यह चरण "संपूर्ण स्वच्छता" या संपूर्ण स्वच्छता पर केंद्रित है, जिसमें ओडीएफ प्लस गांव बनाना और स्वच्छता मानकों में सुधार करना शामिल है। 1.40 लाख करोड़ रुपये के निवेश द्वारा समर्थित यह चरण स्वच्छता के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं को एकीकृत करता है।



2

सितंबर 2024 तक, भारत भर में 5.87 लाख से अधिक गांवों ने ओडीएफ प्लस का दर्जा हासिल कर लिया है, जिसमें 3.92 लाख से अधिक गांव ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली लागू कर रहे हैं और 4.95 लाख से अधिक गांव तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली स्थापित कर रहे हैं। इस चरण में 11.64 करोड़ से अधिक घरेलू शौचालयों और 2.41 लाख से अधिक सामुदायिक स्वच्छता परिसरों का निर्माण भी हुआ, जो स्थायी स्वच्छता संबंधी गतिविधियों के प्रति सरकार के समर्पण को रेखांकित करता है।

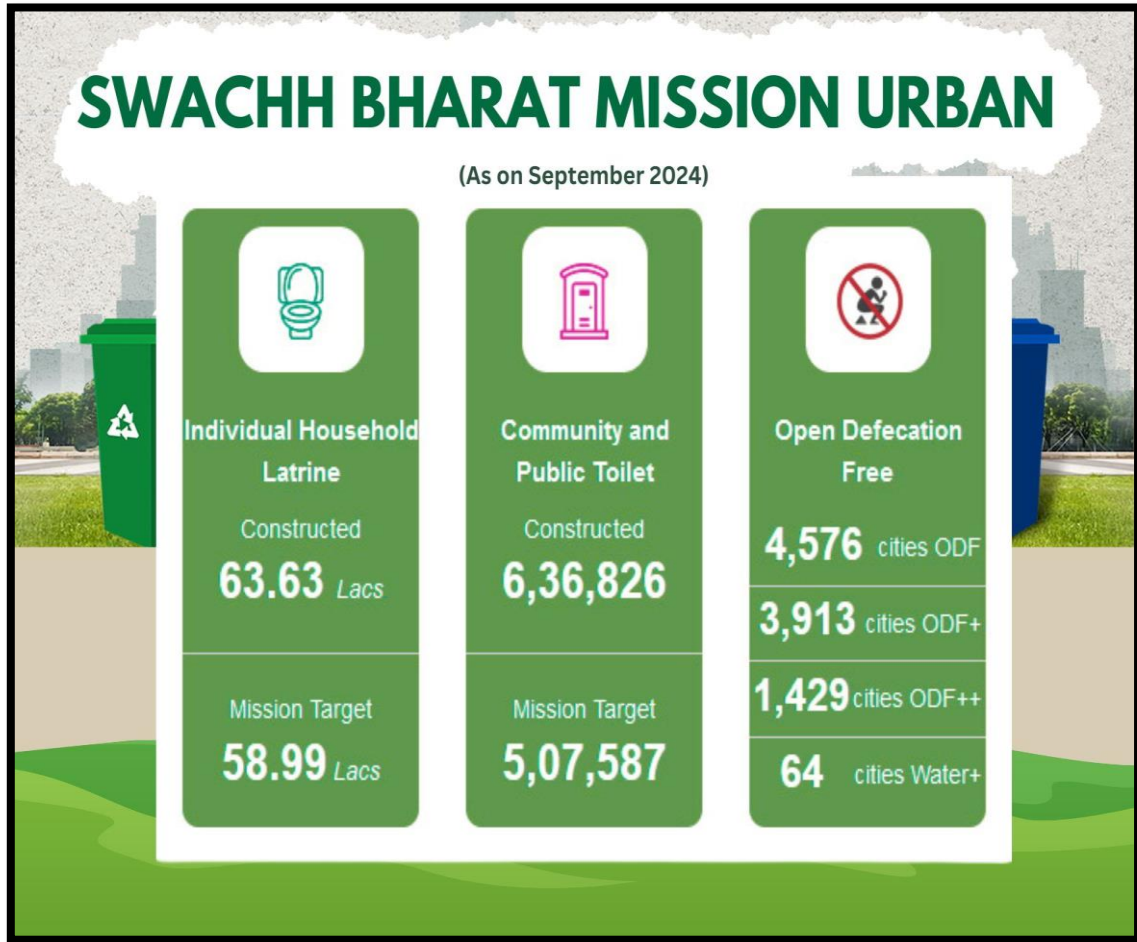
स्वच्छ भारत मिशन - शहरी³

2 अक्टूबर 2014 को लॉन्च किए गए स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) (एसबीएम-यू) ने भारत में शहरी स्वच्छता और साफ-सफाई में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। 100 प्रतिशत खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) स्थिति प्राप्त करने, वैज्ञानिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) सुनिश्चित करने और "जन आंदोलन" (लोगों के आंदोलन) के माध्यम से व्यवहार में बदलाव लाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, एसबीएम-यू का दूरगामी प्रभाव पड़ा है। सितंबर 2024 तक, इस पहल में 63 लाख से अधिक घरेलू शौचालयों और 6.3 लाख से अधिक सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण हुआ है। मजबूत थर्ड-पार्टी

² <https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1923036>

³ <https://sbmurban.org/>

प्रोटोकॉल और व्यापक सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से, एसबीएम-यू ने स्वच्छता को भारत के शहरी विकास एजेंडे में सबसे आगे ला दिया है, जिससे शहर स्वच्छ और स्वस्थ बन गए हैं।



स्वच्छ भारत मिशन के प्रमुख लाभ

दुनिया की अग्रणी बहु-विषयक विज्ञान पत्रिका नेचर में प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा प्रकाशित एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि भारत के महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय स्वच्छता कार्यक्रम, स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) ने देश भर में शिशु और पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रयास से प्रति वर्ष 60,000 - 70,000 शिशु जीवन को बचाया जा रहा है। अध्ययन, जिसमें एक अर्ध-प्रयोगात्मक डिजाइन का उपयोग किया गया है, एसबीएम के तहत शौचालय की पहुंच में बाल जीवन रक्षा के परिणामों में सुधार के साथ जोड़ने वाले मजबूत

सबूत प्रदान करता है। 2014 में लॉन्च हुआ एसबीएम दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रीय व्यवहार परिवर्तन स्वच्छता कार्यक्रमों में से एक है, जिसका उद्देश्य देश भर में घरेलू शौचालय प्रदान करके खुले में शौच को खत्म करना है। यह अनूठा कार्यक्रम अब देश में **संपूर्ण स्वच्छता** सुनिश्चित करने में बदल गया है।

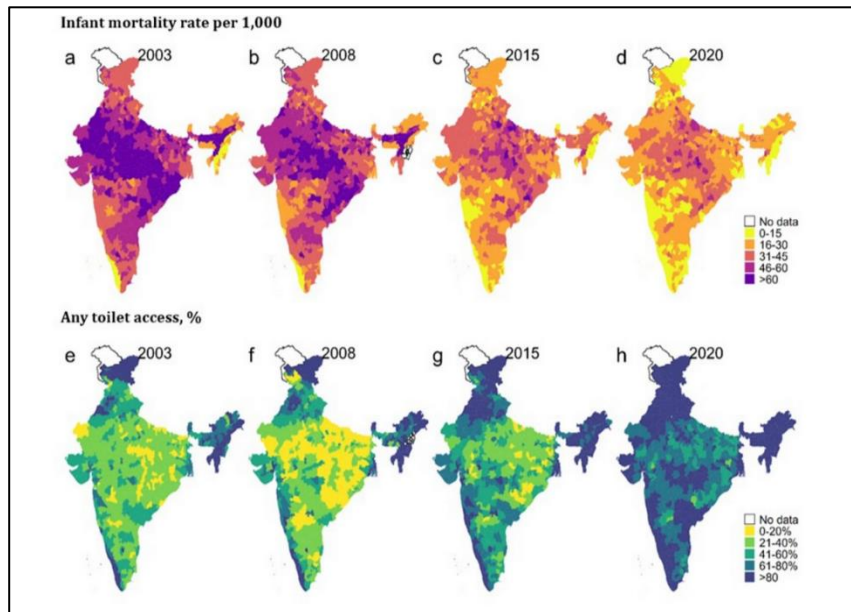
अध्ययन अवलोकन और मुख्य निष्कर्ष:⁴

अध्ययन में एक दशक (2011-2020) तक 35 भारतीय राज्यों और 640 जिलों के डेटा का विश्लेषण किया गया, जिसमें प्राथमिक परिणामों के रूप में प्रति हजार जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) और पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर (यू5एमआर) पर ध्यान केंद्रित किया गया। अध्ययन ने जिला स्तर पर सामाजिक-जनसांख्यिकीय, धन और स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित कन्फ़ाउंडरों को नियंत्रित करने के लिए दो-तरफ़ा निश्चित प्रभाव प्रतिगमन मॉडल को नियोजित किया, जिससे स्वच्छता सुधार और बाल मृत्यु दर के बीच संबंधों का व्यापक विश्लेषण सुनिश्चित हुआ।

मुख्य निष्कर्षों में शामिल हैं:

- ❖ **शौचालय पहुंच और बाल मृत्यु दर के बीच विपरीत संबंध** - ऐतिहासिक रूप से, भारत में शौचालय की पहुंच और बाल मृत्यु दर में एक मजबूत विपरीत संबंध दिखाया गया है।
- ❖ **प्रभाव का पैमाना** - 2014 में एसबीएम के कार्यान्वयन के बाद पूरे भारत में शौचालयों के निर्माण में तेजी से वृद्धि हुई। 2014 के बाद से 1.4 लाख करोड़ से अधिक के सार्वजनिक निवेश के साथ 117 मिलियन से अधिक शौचालयों का

निर्माण किया गया है। विश्लेषणों के नतीजे बताते हैं कि एसबीएम के बाद जिला स्तर की पहुंच में प्रत्येक 10 प्रतिशत अंक की वृद्धि के साथ जिला स्तर पर आईएमआर में 0.9 अंक और यू5एमआर में औसतन 1.1 अंक की कमी होती है। एक सीमा प्रभाव का और भी सबूत है जिसमें जिला-स्तरीय शौचालय कवरेज 30 प्रतिशत (और उससे अधिक) शिशु और बाल मृत्यु दर में पर्याप्त कमी के अनुरूप है। अध्ययन से पता चला कि एसबीएम के तहत 30 % से अधिक शौचालय कवरेज वाले जिलों में प्रति हजार जीवित जन्मों पर आईएमआर में 5.3 और यू5एमआर में 6.8 की कमी आई है। पूर्ण संख्या में, यह गुणांक सालाना 60,000 - 70,000 शिशु जीवन का पैमाना होगा। इस निष्कर्ष को मजबूती जांच और मिथ्याकरण परीक्षणों द्वारा समर्थित किया गया, जिससे परिणामों की वैधता की पुष्टि हुई।



⁵ Source: ¹ <https://www.nature.com/articles/s41598-024-71268-8/figures/1>

❖ एसबीएम का अनोखा दृष्टिकोण

⁵ <https://www.nature.com/articles/s41598-024-71268-8/figures/1>

आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) और सामुदायिक जुड़ाव में पर्याप्त निवेश के साथ शौचालय निर्माण के संयोजन का एसबीएम का दृष्टिकोण भारत में पूर्व स्वच्छता प्रयासों से एक उल्लेखनीय विचलन दर्शाता है, जिसमें अक्सर ऐसी व्यापक रणनीतियों का अभाव था। यह अध्ययन शिशु और शिशु स्वच्छता में कमी का नया सबूत प्रदान करता है। एसबीएम के व्यापक राष्ट्रीय स्वच्छता कार्यक्रम के बाद बाल मृत्यु दर, सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार इसकी परिवर्तनकारी भूमिका का संकेत देती है। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि एसबीएम के तहत शौचालयों तक पहुंच से फेकेलिस-मौखिक रोगजनकों के संपर्क में कमी आने की संभावना है, जिससे दस्त और कुपोषण की संभावना कम हो जाती है, जो कि भारत में बाल मृत्यु दर के प्रमुख कारक हैं।

भविष्य की पहल

स्वच्छ भारत मिशन अधिक व्यापक और स्थायी चरण के लिए तैयार हो रहा है, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों जैसे दीर्घकालिक स्वच्छता समाधानों पर जोर दिया जा रहा है। एसबीएम के भविष्य के कदम "स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता" थीम के तहत व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने, स्वच्छता को जीवन के एक तरीके के रूप में बढ़ावा देने पर केंद्रित होंगे।

सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करना, अपशिष्ट प्रबंधन बुनियादी ढांचे का विस्तार करना और जमीनी स्तर और नीति दोनों स्तरों पर निरंतर प्रयास सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण तत्व हैं। इसके अलावा, सफाई मित्रों और अन्य स्वच्छता हितधारकों की मान्यता का उद्देश्य एक समावेशी वातावरण बनाना है, जहां हर कोई स्वच्छता बनाए रखने में योगदान देता है।

केंद्रीय मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सरकार, गैर सरकारी संगठनों, कॉर्पोरेट्स और नागरिकों के बीच सहयोग एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत के निर्माण की कुंजी है। उम्मीद है कि एसएचएस अभियान भविष्य की इन पहलों के लिए मंच तैयार करेगा, जो स्थायी रूप से स्वच्छ और हरित भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगा।

निष्कर्ष

स्वच्छ भारत मिशन एक परिवर्तनकारी पहल है जिसने भारत में स्वच्छता में क्रांति ला दी है और व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया है। लाखों शौचालय उपलब्ध कराकर, शिशु मृत्यु दर को कम करके और महिलाओं की सुरक्षा में सुधार करके, मिशन ने भारतीयों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। यह दुनिया में सबसे बड़ी और सबसे सफल सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों में से एक है। यह दर्शाता है कि कैसे स्वच्छता सुधार एक स्वस्थ, सुरक्षित और अधिक समृद्ध समाज का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ

<https://www.myscheme.gov.in/schemes/sbm-g-i>

https://swachhbharatmission.ddws.gov.in/about_sbm

<https://sbm.gov.in/sbmgdashboard/StatesDashboard.aspx>

<https://sbmurban.org/>

<https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2052319>

Swachh Bharat Mission Operational Guidelines : <https://sbmurban.org/swachh-bharat-mission-progress>

<https://sbm.gov.in/sbmgdashboard/StatesDashboard.aspx>

<https://www.nature.com/articles/s41598-024-71268-8/figures/1>

Swachh Bharat Mission Urban 2.0 Newsletter 2024: <https://sbmurban.org/>

<https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1923036>

<https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2050197>

संतोष कुमार / ऋतु कटारिया / मदीहा इकबाल